International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 88-92

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 88-92
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-11-2021
Accepted: 29-12-2021

योगिन्द्रा देवी
शोधकर्त्री- विश्वेश्वरानन्दविश्वबंधु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय,साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाबी, भारत

Corresponding Author:
योगिन्द्रा देवी
शोधकर्त्री- विश्वेश्वरानन्दविश्वबंधु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय,साधु आश्रम, होशियारपुर, पंजाबी, भारत

सांख्यटीकाओं में सिद्धि : एक विमर्श

योगिन्द्रा देवी

प्रस्तावना

ज्ञान की प्राप्ति को ही सिद्धि कहते हैं।[1] सांख्यदर्शन के अनुसार ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख उद्देश्य दु:खनिवृत्ति है। प्रकृति-पुरुष का पृथक्- पृथक् दर्शन ही सांख्यदर्शन के अनुसार ज्ञानरूपा सिद्धि है, जैसे स्थाणु को देखकर स्थाणु में किसी भी प्रकार का संशय न होना अर्थात् स्थाणु में स्थाणु का ज्ञान होना ही सिद्धि है।[2] युक्तिदीपिका में यथेष्ट के साधन को तथा सम्पूर्ण कार्यातिशेष के अनुष्ठान को सिद्धि कहा गया है।[3] बुद्धि के धर्म "ज्ञान" का अंतर्भाव सिद्धि में ही होता है। आचार्य ईश्वरकृष्ण प्रोक्त सिद्धियां आठ प्रकार की हैं-

ऊह: शब्दोऽध्ययनं दु:खविघातास्त्रय: सुहृत्प्राप्ति:।
दानं च सिद्धयोऽष्टौ सिद्धे: पूर्वोऽङ्कुशस्त्रिविध:॥ [4]

अर्थात् ऊह, शब्द, अध्ययन, तीन प्रकार के दु:खों का नाश, सुहृत्प्राप्ति तथा दान ये आठ प्रकार की सिद्धियां हैं तथा सिद्धि में विपर्यय, अशक्ति तथा तुष्टि ये तीन बाधक हैं। आचार्य ईश्वर कृष्ण द्वारा प्रोक्त कारिका की व्याख्या टीकाकारों के अनुसार दो प्रकार से प्राप्त होती है। प्रथम प्रकार में सिद्धियों का वही क्रम है जो कारिका में कहा गया है। दूसरी प्रकार की व्याख्या में इनका क्रम कुछ भिन्न दिखाई देता है।[5] आचार्य माठर, गौडपाद तथा जयमंगलाकार ने प्रथम क्रमानुसार सिद्धियों की व्याख्या की है।[6] आचार्य वाचस्पति ने दूसरे क्रम को अपनाया है तथा अपने क्रम को उचित ठहराते हुए कहा है कि अन्य विद्वानों द्वारा की गई व्याख्या कारिका के अभिप्राय का अनुसरण करती है या नहीं, इस विषय में तो विद्वद्गण ही चिंतन करें।[7]

प्रथम क्रमानुसार सिद्धियों की व्याख्या –

ऊह सिद्धि - साधक चिंतन करता है कि वास्तविक तत्त्व क्या है? मोक्ष किसे कहते हैं? सुख कैसे प्राप्त किया जाता है? इस प्रकार चिंतन करते-करते शास्त्र से या गुरू से ज्ञान प्राप्त करके वह यह जान लेता है कि प्रकृति,बुद्धि, अहंकार, तन्मात्र, इंद्रिय तथा भूत अन्य है और पुरुष अन्य है, इसके पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही ऊह नामक सिद्धि है।[8] जयमंगला में सिद्धि का अर्थ ज्ञानप्राप्ति है तथा वे उपाय-भेद के आधार पर सिद्धि को आठ प्रकार की मानते हैं। उनके अनुसार जन्मांतर से प्राप्त संस्कार-बुद्धि वाले जिस साधक को बन्ध तथा मोक्ष का विचार करते-करते प्रकृति-पुरुष के अंतर का ज्ञान हो जाए उस साधक को ऊह सिद्धि हो जाती है। इस सिद्धि को तार भी कहा गया है।[9] प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम प्रमाण के बिना केवल विचार बल से अभिप्रेत सिद्धि को ऊह सिद्धि कहा गया है। इसे तारक भी कहा गया है। युक्तिदीपिका में स्पष्ट किया गया है कि यह सिद्धि संसार- सागर से पार लगा देती है, अत: तारक है।[10]

शब्द सिद्धि- जब कोई साधक किसी के पढ़ते हुए शब्द को सुनता है कि प्रकृति अन्य है तथा पुरुष अन्य है, इस प्रकार की धारणा से प्रबुद्ध होकर वह मोक्ष प्राप्त करता है, तो शब्द सिद्धि होती है। शब्द से उत्पन्न होने के कारण इस सिद्धि को शब्द सिद्धि कहते हैं।[11]

आचार्य गौडपाद के अनुसार शब्द ज्ञान से प्रधान, पुरुष, बुद्धि, अहंकार, पंचतन्मात्र, इन्द्रिय तथा पाँच महाभूत विषयक ज्ञान होता है तत्पश्चात् मोक्ष, यही शब्द सिद्धि है। [12] अन्य व्यक्ति के सांख्यशास्त्रपरक शब्दों को सुनकर जो ज्ञान प्राप्त होता है जयमंगलाकर के मत में वही शब्द है।[13] युक्तिदीपिका के अनुसार जब साधक को अपने प्रयत्नों से संपादित ज्ञानार्जन में रुकावट आती है तो गुरु के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करने पर शब्द सिद्धि होती हैं।[14] इस सिद्धि को आचार्यों ने सुतार कहा है। सुतार इसलिए कहा है क्योंकि इससे संसार के संकट से सुखपूर्वक तर जाते हैं।[15]

अध्ययन सिद्धि - माठरवृत्ति में अध्ययन सिद्धि के संदर्भ मे उक्त है कि जब कोई साधक गुरु की उपासना कर उनसे अध्ययनपूर्वक सम्पूर्ण सांख्यज्ञान प्राप्त करता है, यही अध्ययन नामक सिद्धि है।[16] गौडपादभाष्य में वेदादि शास्त्र के अध्ययन से पच्चीस तत्वों की ज्ञानप्राप्ति को अध्ययन सिद्धि कहा गया है।[17] इस सिद्धि को उपर्युक्त आचार्यों ने तारतार कहा है। जयमंगला में कहा गया है कि जब शिष्य और आचार्य संबंध से सांख्यशास्त्र का शब्दश: तथा अर्थश: अध्ययन कर ज्ञान उत्पन्न होता है, तो वह अध्ययन सिद्धि होती है। अध्ययनहेतुक होने से यह अध्ययन सिद्धि है। इसे तारवि भी कहा जाता है।[18] युक्तिदीपिका का मत है कि जब अन्य के उपदेश से भी साधक ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ होता है तब वह स्वयं के अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। यह अध्ययन सिद्धि है। युक्तिदीपिका में इसे तारण क्रिया के सक्रिय रहने पर "तारयन्तम्" कहा गया है।[19]

तीन प्रकार के दु:खों के नाश से होने वाली त्रिविध सिद्धि - माठरवृत्ति में वर्णित है कि आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक इन तीन प्रकार के दु:खों से संतप्त होकर जो साधक उनके प्रतिकार के लिए ऊह, शब्द तथा अध्ययन सिद्धि को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करता है, उसकी तीन सिद्धियां होती हैं।[20] तीन दु:खों के नाश के लिए वह ऊहादि तीन सिद्धियों का उपयोग करता है। परंतु गौडपाद के मत में साधक आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक तीनों दु:खों के नाश के लिए गुरु के पास जाकर उनसे मोक्ष प्राप्त करता है यही चौथी सिद्धि है। तीन दु:खों के नाश के आधार पर इसके तीन विभाग हो गए हैं।[21] जयमंगलाकार के मत में जब साधक आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक, इन तीन प्रकार के दु:खों से पीड़ित होकर इनके नाश के लिये ऊह, शब्द, अध्ययन इन तीनों से ज्ञान प्राप्त करता है तो दु:खविघात होने के कारण उसकी तीन प्रकार की सिद्धियाँ होती हैं, जिन्हें प्रमोद, मुदित तथा मोदन कहा गया है।[22] आध्यात्मिक दु:ख के नाश से होने वाली सिद्धि को प्रमोद कहते हैं। आधिभौतिक तथा आधिदैविक दु:ख के नाश से होने वाली सिद्धि क्रमश: मुदित तथा मोदन कहलाती है।

युक्तिदीपिका में तीनों प्रकार के दु:ख के नाश का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। इनके मत में जब साधक ऊह, शब्द, अध्ययन में से किसी एक के द्वारा सिद्धि प्राप्त करता है, तो वह चतुर्थ सिद्धि है। इसे प्रमोद सिद्धि कहते हैं। प्राणियों को रोगों से निवृत्त करने के कारण इसे प्रमोद कहा जाता है।[23] इसी प्रकार जब साधक आधिभौतिक दु:ख को सामादि उपायों के द्वारा सिद्ध कर लेता है, तो पाँचवी सिद्धि होती है, जिसे प्रमुदित कहते हैं।[24] साधक जब आधिदैविक दु:ख का धर्मानुरोध से प्रतिघात करके ऊहादि में से किसी एक के द्वारा सिद्धि प्राप्त करता है, तो छठी सिद्धि होती है। इसे मोदमान भी कहा जाता है। द्वन्द्वों का नाश कर प्राणियों को प्रसन्न करने के कारण इसे मोदमान कहा गया है।[25]

सुहृत्प्राप्ति - जब किसी मन्दमति शिष्य की गुरु द्वारा प्रोक्त शास्त्रीय अर्थ ग्रहण करने में बुद्धि प्रवृत्त नहीं होती तब उस साधक को उसका मित्र सरल शैली में प्रकृति-पुरुष का विवेकात्मक ज्ञान कराता है। यही उसकी सुहृत्प्राप्ति है।[26] सुहृत् से ज्ञान प्राप्त कर वह मुक्त हो जाता है। माठरवृत्ति तथा गौडपादभाष्य में उक्ताभिप्राय से सुहृत्प्राप्ति नामक सिद्धि की व्याख्या की गई है।[27] जयमंगला के अनुसार तत्त्ववेत्ता साधक जब सुहृत् के पास पहुंचकर ज्ञान प्राप्त करता है तब उसकी यह सुहृत्प्राप्तिपूर्वक सिद्धि सुहृत्प्राप्ति है। इसमें मित्र स्नेहवश ज्ञान का प्रकाशन कर देता है।[28] युक्तिदीपिका में सन्मित्र को प्राप्त करके साधक के संदेह की निवृत्तिपूर्वक अधिगत सिद्धि को रम्यक नाम से कहा गया है। लोक में सन्मित्र का संपर्क रमणीय होने से आचार्यों ने इसे रम्यक कहा है।[29]

दान- माठरवृत्ति में दान नामक आठवीं सिद्धि के संदर्भ में कहा गया है कि जब कोई साधक आवाहन, संवाहन, भिक्षा, पात्र, वस्त्र, छत्र, कमंडलु आदि देकर गुरु को प्रसन्न करके मोक्ष प्राप्त करता है तो उस साधक की इन दानादि उपायों से यह सिद्धि निष्पन्न होती है।[30]

गौडपादभाष्य में दान की सूची में आश्रय, औषधि, त्रिदण्ड, कुंडिका, ग्रासादि को बताया गया है। इसके अतिरिक्त दान सिद्धि से संबन्धित अभिप्राय माठरसम्मत ही है।[31] जयमंगलाकार के अनुसार जब दान से आराधित ज्ञानी ज्ञान दे देता है तब यह सिद्धि होती है।[32] युक्तिदीपिका के अनुसार दान के द्वारा साधक जब दुर्भाग्य को दूर कर ऊह आदि में से किसी एक के द्वारा सिद्धि प्राप्त करता है तो उसे दान नामक सिद्धि कहते हैं। इस सिद्धि को सभी आचार्यों ने सदाप्रमुदित कहा है।[33]

द्वितीय क्रमानुसार सिद्धियों की व्याख्या - सांख्यकारिका के टीकाकारों में आचार्य वाचस्पति मिश्र ने इस क्रम से व्याख्या की है।[34] इस क्रम में उन्होनें सिद्धियों का क्रम परिवर्तित किया है। उनके अनुसार सिद्धियों का क्रम इस प्रकार है - 1.अध्ययन 2. शब्द 3.ऊह 4. सुहृत्प्राप्ति 5. दान, 6.आध्यात्मिक दु:खविघात 7. आधिभौतिक दु:खविघात 8. आधिदैविक दु:खविघात। वाचस्पतिमिश्र ने गौण-मुख्य भेद से यह विभाजन किया है। इन सिद्धियों में अन्तिम तीन सिद्धियां मुख्य हैं, शेष पांच सिद्धियां गौण हैं। यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने यह विभाजन कार्यकारण रूप में किया है क्योंकि आचार्य वाचस्पति मिश्र के अनुसार अध्ययन नामक प्रथम सिद्धि केवल कारणरूपा है जो सातों सिद्धियों का कारण है। मध्य की चार सिद्धियां कारणकार्योभयात्मक है। यह कारणरूपात्मक इसलिए है क्योंकि इनका कार्य मुख्य तीन सिद्धियां हैं तथा यह स्वयं अध्ययन सिद्धि का कार्य है। अन्तिम तीन सिद्धियाँ केवल कार्यरूपात्मक है। इन सिद्धियों के स्वरूप को इस प्रकार समझा जा सकता है -

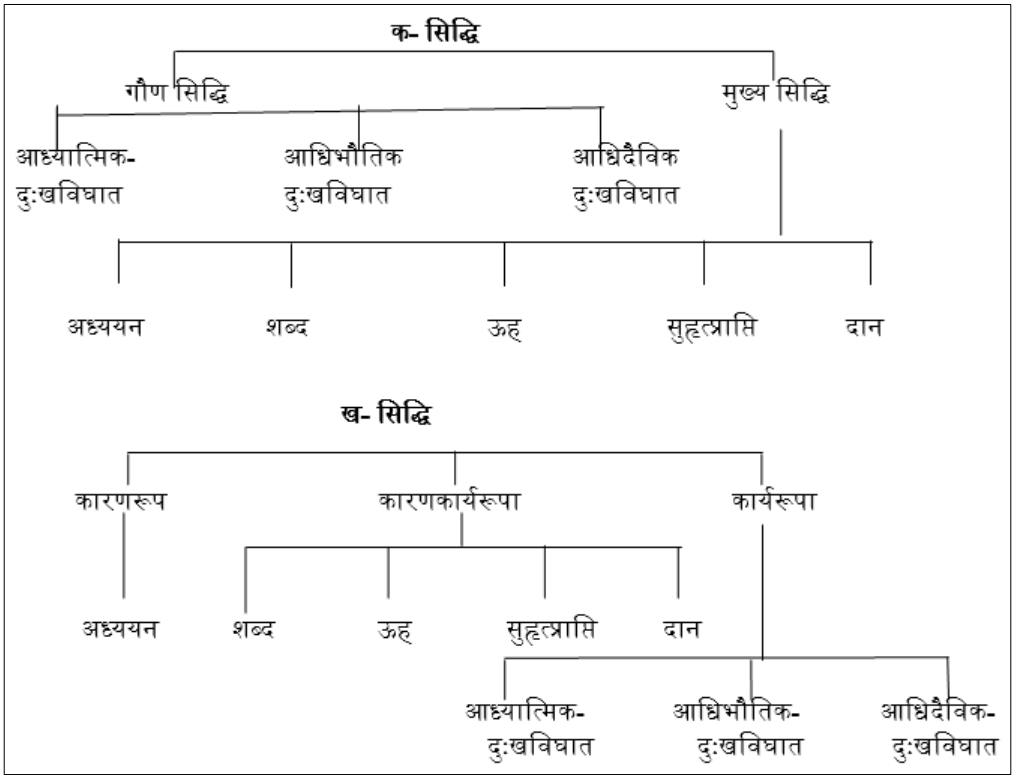

अध्ययन- गुरु के मुख से विधिवत् अध्यात्मविद्याओं के अक्षर स्वरूप को ग्रहण करना ही अध्ययन है, इसे तार कहा गया है। [35]

शब्द- शब्द द्वितीय सिद्धि है। यह अध्ययन सिद्धि का कार्य है। शब्द अर्थज्ञान का कारण होता है और अर्थज्ञान शब्द का कार्य है। वाचस्पति मिश्र ने कारण-कार्य में अभेद मानकर शब्द को अर्थज्ञान का बोधक माना है। यह सिद्धि सुतार भी कही जाती है।[36] अध्ययन तथा शब्द ये दोनों सिद्धियां गुरु से किए गए श्रवण से संबन्धित है, किन्तु इन दोनों मे अंतर है। अध्ययन सिद्धि पाठविषयक सिद्धि है तथा शब्द अर्थविषयक सिद्धि है। इस प्रकार आचार्य ने श्रवण के दो भेद किए हैं- पाठविषयक तथा श्रवणविषयक।[37]

ऊह- ऊह का अर्थ तर्क है। आगम के अनुसार युक्तियों से आगमार्थ की परीक्षा करना ही ऊह है। परीक्षा में संदिग्ध पूर्वपक्ष का निराकरण किया जाता है और सिद्धांत पक्ष की स्थापना की जाती है। इस ऊह नामक सिद्धि को तारतार कहा जाता है।[38]

सुहृत्प्राप्ति- सुहृत्प्राप्ति चतुर्थ सिद्धि है। युक्तिपूर्वक स्थापित किए गए शास्त्रीयार्थ में तब तक श्रद्धा नहीं होती है, जब तक कि संबन्धित विषय पर गुरु, शिष्य तथा सुहृत् के साथ विचार-विमर्श न किया जाये, अत: विचार करने वाले शास्त्रीय विषय पर गुरु, शिष्य तथा सहाध्यायी की प्राप्ति ही सुहृत्प्राप्ति है। इसे रम्यक भी कहा गया है।[39]

दान- आचार्य के अनुसार पांचवी सिद्धि दान है। अन्याचार्यों ने दान शब्द की व्युत्पत्ति दानार्थक दा धातु से मानी है। किन्तु वाचस्पति मिश्र ने दान सिद्धि को शोधनार्थक दैप् धातु से माना है। उनके अनुसार दान का अर्थ विवेकज्ञान की शुद्धि है। विवेकज्ञान का उपाय अभ्यास है [40], जो आदरपूर्वक निरंतर तथा दीर्घकाल तक किया गया हो।[41] अभ्यास की पराकाष्ठा के बिना विवेकख्याति नहीं होती है। आचार्य वाचस्पति मिश्र ने विवेकख्याति अर्थात् दानात्मकसिद्धि कार्य से अभ्यास रूप कारण को भी इस सिद्धि में ग्रहण किया है। यह हमेशा आनन्द का हेतु होने से सदामुदित कहलाती है।[42]

तीन प्रकार के दु:खों के नाश से होने वाली त्रिविध सिद्धि - आध्यात्मिक दु:खविघात, आधिभौतिक दु:खविघात, आधिदैविक दु:खविघात ये तीनों मुख्य सिद्धियां हैं तथा इनको क्रमश: प्रमोद, मुदित तथा मोदमान कहा गया है।[43] आचार्य वाचस्पति मिश्र ने अपने मत को यहीं तक वर्णित कर समाप्त कर दिया।

टीकाकारों की दृष्टि से सांख्यकारिका में अभिहित सिद्धियों के नामकरण में वैमत्य है, उनके द्वारा प्रदत्त सिद्धि विषयक पारिभाषिक नाम इस प्रकार है –

क्र.	साख्यकारिका	माठरवृत्ति	गौडपादभाष्य	जयमंगला	युक्तिदीपिका	साख्यतत्त्व- कौमुदी
1	ऊह	तार	तार	तार	तार	तारतार
2	शब्द	सुतार	सुतार	सुतार	सुतार	सुतार
3	अध्ययन	तारतार	तारतार	तारवि	तारयन्त	तार
4	आध्यात्मिक दु:खविघात	प्रमोद	प्रमोद	प्रमोद	प्रमोद	प्रमोद
5	आधिभौतिक दु:खविघात	प्रमुदित	प्रमुदित	प्रमुदित	प्रमुदित	मुदित
6	आधिदैविक दु:खविघात	मोदन	प्रमोदमान	मोदन	मोदमान	मोदमान
7	सुहृत्प्राप्ति	रम्यक	रम्यक	रम्यक	रम्यक	रम्यक
8	दान	सदाप्रमुदित	सदाप्रमुदित	सदाप्रमुदित	सदाप्रमुदित	सदामुदित

प्रत्ययसर्ग में विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि तथा सिद्धि का समावेश है। इन चार मुख्य भेदों में विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि हेय है तथा सिद्धि उपादेय है। ये तीनों सिद्धि के बाधक हैं। आचार्य ईश्वरकृष्ण ने कारिकांश में 'सिद्धे: पूर्वोऽङ्कुशस्त्रिविध:' [44] कह कर विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि को सिद्धि के बाधक स्वीकृत किया है। जिस प्रकार विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि, सिद्धि के प्रतिपक्ष हैं, उसी प्रकार सिद्धि भी इन तीनों की प्रतिपक्ष है।[45] जब सिद्धि प्रबल होती है, तो वह विपर्ययादि को निवारित कर देती है। जब विपर्ययादि तीन प्रबल होते हैं, तो वे सिद्धि को निवर्तित कर देते हैं। अत: सिद्धि सर्ग उपादेय है। आचार्य गौडपाद ने सिद्धि को किंचिद् भिन्न रूप में समझाया है। उनके अनुसार जैसे हाथी अङ्कुश धारण करने वाले के वश में होता है, उसी प्रकार विपर्यय, अशक्ति, तुष्टि के द्वारा वशीभूत होकर व्यक्ति अज्ञान प्राप्त करता है। [46] अत: इनके वश से निकलकर सिद्धियों को ही ग्रहण करना चाहिए। सिद्धि से ही तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है। तत्त्वों के सम्यक् ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

संदर्भ सूची

1. सिद्धिर्ज्ञानप्राप्ति:। शर्मा, हरदत्त. जयमंगला., कारिका. 56. पृ.54.
2. सिद्ध्याख्यो यथा आनन्दितेन्द्रिय: स्थाणुमारूढां वल्लिं पश्यति शकुनिं वा तस्य सिद्धिर्भवति स्थाणुरयमिति। गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य., कारिका. 46.पृ.88.
3. यथेष्टस्य साधनं सिद्धि: तथा कृत्स्नस्य क्रियातिशेषस्यानुष्ठानं सिद्धि:। पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका.46.पृ.127.
4. सांख्यकारिका. 51.
5. शुक्ल, उमाकान्त. सांख्यकारिका. पृ. 216.
6. वहीं.
7. अस्य च युक्तायुक्तत्वे सूरिभिरेवावगन्तव्ये इति कृतम्परदोषोद्भावनेन न:सिद्धान्तमात्रव्याख्यान प्रवृत्तानामिति॥ मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री. सांख्यतत्त्वकौमुदी. कारिका. 51. पृ. 264.
8. क तत्र ऊहो नाम यथा कश्चित् चिन्तयति, किं परं यथात्म्यं किं नि:श्रेयसम्, किं कृत्वा सुखं प्राप्यते । एवमस्य चिन्तयतो ज्ञानमुत्पद्यते स्वत:शास्त्रतो गुरूतो वा। यत्प्रधानबुद्धयहंकार तन्मात्रेन्द्रियभूतान्यन्यानि अहमन्य इति ततो मोक्षं गच्छति, एषा ऊहसिद्धि: प्रथमा। उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51. पृष्ठ.173.
   ख ऊहो यथा कश्चिन्नित्यमूहते किमिह सत्यं किं परं किं नै:श्रेयसं किं कृत्वा कृतार्थ: स्याम, इति चिन्तयतो ज्ञानमुत्पद्यते प्रधानादन्य एव पुरूष इतोऽन्या बुद्धिरन्योऽहंकारोऽन्यानि तन्मात्राणीन्द्रियाणि पञ्च महाभूतानीत्येकं तत्त्वज्ञानमुत्पद्यते येन मोक्षो भवति एषा ऊहाख्यासिद्धि:॥ गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य., कारिका. 51. पृष्ठ.99.
9. सिद्धिर्ज्ञान प्राप्ति: तस्या: भेदा उपायभेदात् ।ऊह इति जन्मान्तर संस्कृतधियो यस्य बन्धमोक्षकारणमुत्प्रेक्षमाणस्य प्रधानपुरूषान्तरज्ञानमुत्पद्यते तस्य सिद्धिरूहहेतुका प्रथमा तारमुच्यते। शर्मा, हरदत्त. जयमंगला. कारिका. 51. पृष्ठ.54.
10. तत्रोहो नाम यदा प्रत्यक्षानुमानागमव्यतिरेकेणाभिप्रेतमर्थं विचारणाबलेनैव प्रतिपद्यते, साद्या सिद्धि: तारकमित्यपदिश्यते। तारयति संसारार्णवादिति तारकम्। पाण्डेय,रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.134.
11. शब्दो नाम यथा कस्यचित्पठत: शब्दं श्रुत्वाऽन्यत् प्रधानमन्योऽहमिति तन्मार्ग प्रवृत्तिप्रबुद्धो मोक्षं गच्छति । एवमेषा द्वितीया सिद्धि: शब्दत: उत्पन्ना। उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51.पृष्ठ.173.
12. तथा शब्द ज्ञानात् प्रधानपुरूषबुद्धयहंकारतन्मात्रेन्द्रियपञ्चभूत विषयं ज्ञानं भवति,ततो मोक्ष इत्येषा शब्दाख्या सिद्धि। गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य., कारिका. 51.पृष्ठ.99.
13. यस्य सांख्यशास्त्रपाठमन्यदीयमाकर्ण्य तत्त्वज्ञानमुत्पद्यते सा सिद्धि: शब्दहेतुका द्वितीया सुतारमित्युच्यते । शर्मा, हरदत्त. जयमंगला., कारिका.51.पृष्ठ.54.
14. यदा तु स्वयं प्रतिपत्तौ प्रतिहन्यमानो गुरूपदेशात्प्रतिपद्यते सा द्वितीया सिद्धि: सुतारमित्यपदिश्यते । पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.134.
15. सुखमनेनाघत्वेऽपि भवसंकटात्तरन्तीति । पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.134.
16. कश्चित् गुरुपासनया ततोऽधीत्यावगम्य सकलं ज्ञानमाप्नोति तृतीयाध्ययन सिद्धि: सांख्यज्ञानमधीत्य सञ्जाता। उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51.पृष्ठ.173.
17. अध्ययनाद् वेदादि शास्त्राध्ययनात् पञ्चविंशतितत्त्वज्ञानं प्राप्यते मोक्ष: याति,. इत्येषा तृतीया सिद्धि:। गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य., कारिका. 51.पृष्ठ.99.
18. यस्य शिष्याचार्यसम्बन्धेन सांख्यशास्त्रं शब्दतोऽर्थतश्चाधीत्य ज्ञानमुत्पद्यते, तस्य अध्ययनहेतुका। अध्ययनेन हि तत्परिज्ञानात्। एषा तृतीया तारवि इत्युच्यते। शर्मा,हरदत्त. जयमंगला., कारिका. 51.पृष्ठ.55.
19. यदा त्वन्योपदेशादप्यसमर्थ: प्रतिपत्तुमध्ययनेन साधयति सा तृतीया सिद्धि:, तारयन्तमित्यपदिश्यते। तदेतत्तारणक्रियाया अद्यत्वेऽपि अव्यावृत्तत्त्वान्महाविषयत्वात्तारयन्तमित्यपदिष्टम्। पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.135.
20. शुक्ल, उमाकान्त. सांख्यकारिका .पृष्ठ.218.
21. क दु:खविघातत्रयमीति। यथा कश्चिदादावभिहितध्यात्मिकादिदु:खत्रयेणाभिभूतोपिऽस्य प्रतीकाराय ऊहं शब्दमध्ययनं वा प्रतिपद्य ज्ञानमधिगम्य मोक्षं यातीति दु:खविघाताय यत्रोहादित्रयमधिकुरुते तदपि सिद्धित्रयम्। एवं षट् सिद्धय:। उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51.पृष्ठ.173.
   ख दुखाविघातस्रय:। आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकदु:खत्रयविघाताय गुरुं समुपगम्य तदुपदेशान्मोक्षं याति, एषा चतुर्थी सिद्धि: एषा एव दु:खत्रयभेदात् त्रिधा कल्पनीयते षट् सिद्धय:। गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य., कारिका. 51.पृष्ठ.99.
22. योऽप्याध्यात्मिकेनाधिभौतिकेनाधिदैविकेन वा भावितस्तद्विघातार्थं ज्ञानं पर्येष्यति। ऊहेन शब्देनाध्ययनेन वा,तस्यतद्विघातहेतुका: प्रमोदमुदितमोदनाख्यस्तिस्र: उपायस्य त्रित्वादिति। शर्मा,हरदत्त. जयमंगला., कारिका. 51पृष्ठ.55.
23. तत्र चाध्यात्मिकानां वातादीनां सिद्धिप्रत्यनीकानामायुर्वेदक्रियानुष्ठानेन विघातं कृत्वा पूर्वेषां त्रयाणमन्यतमेन साधयति, सा चतुर्थी सिद्धि: प्रमोदमित्यभिधीयते। निवृत्त रोगा हि प्राणिन: प्रमोदन्त इति कृत्वा। पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका,कारिका.51.पृष्ठ.135.
24. यदा तु आधिभौतिकानां मानुषादिनिमित्तानां सिद्धिप्रत्यनीकानां सामादिना यतिधर्मानुगुणेन वोपायेन पूर्वेषां त्रयाणामन्यतमेन साधयति सा पञ्चमी सिद्धि: प्रमुदितमित्यभिधीयते ।अनुद्विग्नो हि प्रमुदित इति कृत्वा । पाण्डेय,रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.135.
25. यदा तु शीतादीन्याधिदैविकानि द्वन्द्वानि सिद्धिप्रत्ययनीकानि स्वधर्मानुरोधेन प्रतिहत्य पूर्वेषां त्रयाणामन्यतमेन साधयति, सा षष्ठी सिद्धि: मोदमानं इत्यभिधीयते द्वन्द्वानुपहता हि प्राणिनो

मोदन्त इति कृत्वा। पाण्डेय,रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.135.

26. शुक्ल, उमाकान्त. सांख्यकारिका .पृष्ठ.218
27. क कश्चिद् दुर्मेधा गुरो: सकाशात् नावधारयति । तत् केनचित् प्रत्युपकारानपेक्षेण सुहृदा तस्मात् संसारकूपादुज्जिहीर्षुणा तदनुकूलतया कृपावत सुगम वचोभिर्वैराग्यपूर्वकं गुणपुरूषान्तरोपलब्धिरूपं सांख्यज्ञानमुपदिशता समुद्धृतमावलोक्याह भगवान् शास्त्रकार:सुहृत्प्राप्तिरीति । उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51.173.
ख यथा काश्चित् सुहृज्ज्ञानमधिगम्य मोक्षं गच्छति एषा सप्तमी सिद्धि:। गौड़, ज्वालाप्रसाद.गौडपादभाष्य., कारिका. 51पृष्ठ.99.
28. योऽधिगततत्त्व: सुहृदं प्राप्य ज्ञानमधिगच्छति, तस्य सुहृत्प्राप्तिपूर्विका। मित्रं हि स्नेहात् ज्ञानं प्रकाशयति। इयं सप्तमी रम्यकं इत्युच्यते। शर्मा, हरदत्त. जयमंगला., कारिका. 51.पृष्ठ.55.
29. सुहृत्प्राप्ति, यदा तु कुशल संस्पृष्टं सन्मित्रमाश्रित्य सन्देहनिवृत्तिं लभते, सा रम्यकमिति सप्तमी सिद्धिरपदिश्यते रम्यो हि लोके सन्मित्रसंपर्क:। पाण्डेय,रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51 पृष्ठ.135.
30. कश्चिदावाहन संवाहन भिक्षापात्र वस्त्रच्छत्र कमण्डलुप्रभृति दानेन गुरुनाराध्य सांख्यमधिगम्य मोक्षं गच्छतीत्येषाऽष्टमी सिद्धि: दानादिभिरुपायैर्निष्पन्ना। उप्रेति, प.थानेशचन्द्र. माठरवृत्ति., कारिका. 51.पृष्ठ.173.
31. दानं यथा कश्चित् भगवतां प्रत्याश्रयौषधित्रिदण्डकुण्डिकादिनां ग्रासाच्छादनादीनाञ्च दानेनोपकृत्य तेभ्यो ज्ञानमवाप्य मोक्षं याति एषाऽष्टमी सिद्धि:। गौड़,ज्वालाप्रसाद.गौडपादभाष्य.,कारिका. 51.पृष्ठ.100.
32. दानेन ह्याराधितो ज्ञानी ज्ञानं प्रयच्छति । शर्मा, हरदत्त. जयमंगला., कारिका. 51.पृष्ठ.55.
33. यदा तु दौर्भाग्यं दानेनातीत्य पूर्वेषां त्रयाणामन्यतमेन साधयति साऽष्टमी सिद्धि: सदाप्रमुदितमित्यभिधीयते। सुभगो हि सदाप्रमुदितो भवति। तस्माद्दौर्भाग्यनिवृत्ति: सदाप्रमुदितम्। पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका, कारिका. 51.पृष्ठ.135.
34. शुक्ल, उमाकान्त. सांख्यकारिका .पृष्ठ.220.
35. विधिवद्गुरुमुखादध्यात्मविद्यानामक्षरस्वरूप ग्रहणमध्ययनं प्रथमा सिद्धिस्तारमुच्यते। मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री. सांख्यतत्त्वकौमुदी. कारिका. 51.पृष्ठ.260.
36. तत्कार्यं शब्द: इति पदं शब्द जनितमर्थज्ञानमुपलक्षयति कार्ये कारणोपचारात् सा द्वितीया सिद्धि:,सुतारमुच्यते। मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री. सांख्यतत्त्वकौमुदी. कारिका.51.पृष्ठ.261.
37. पाठार्थाभ्यान्तदिदन्द्विधा तदिदं द्विधा श्रवणम् । मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री.सांख्यतत्त्वकौमुदी.कारिका.51.पृष्ठ.261.
38. "ऊह:" तर्क: आगमाविरोधिन्यायेनागमार्थपरीक्षणम्। परीक्षणञ्च संशयपूर्वपक्ष निराकरणेनोत्तरपक्षव्यवस्थापनम् । तदिदम्मननमाचक्षते आगमिन:। सा तृतीया सिद्धिस्तारमुच्यते। वहीं.
39. न्यायेन स्वयम्परीक्षितमप्यर्थे न श्रद्धत्ते न यावद्गुरुशिष्यसब्रह्मचारिभि: सह सम्वाद्यते उच्यते अत: सुहृदां गुरुशिष्यसब्रह्मचारिणां सवादकानां प्राप्ति: सुहृत्प्राप्ति:। सा सिद्धिश्चतुर्थी रम्यकमुच्यते। वहीं.पृष्ठ.262.
40. दानं च शुद्धिविवेकज्ञानस्य, दैप् 'शोधने' इत्यस्यामाद्धातोर्दानपद व्युत्पत्ते:। वहीं.
41. स तु दीर्घकालनैरंतर्यसत्कारासेविता दृढ़भूमि:।योगसूत्र. 1/14
ख सा च न बिनाऽऽदरनैरन्तर्यदीर्घकालसेविताभ्यासपरिपाकाद्ध्रुवतीति। मुसलगाँवकर,गजाननशास्त्री.सांख्यतत्त्वकौमुदी.,कारिका.51.पृ.262.
42. दानेन विवेकख्यात्या कार्येण सोऽपि संगृहीत: सेयम्पञ्चमी सिद्धिस्सदामुदितमुच्यते । मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री. सांख्यतत्त्वकौमुदी., कारिका. 51.पृष्ठ.262.
43. तिस्रश्च मुख्या: सिद्धय: प्रमोद, मुदित, मोदमाना, इत्यष्टौ सिद्धय:। मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री. सांख्यतत्त्वकौमुदी. कारिका. 51. पृष्ठ.263.
44. सांख्यकारिका. 51.
45. यथा च सिद्धे: विपर्याशक्ति तुष्टय: प्रतिपक्षा:, एवं सिद्धिरपि विपर्ययादीनाम् । पाण्डेय, रामचन्द्र. युक्तिदीपिका. 51.पृष्ठ.135.
46. यथा हस्ती गृहीताङ्कुशेन वशो भवति, विपर्ययाशक्तितुष्टिभिर्गृहीतो लोकोऽज्ञानमाप्नोति, तस्मादेता: परित्यज्य सिद्धि: सेव्या, सिद्धे: तत्त्वज्ञानमुत्पद्यते, तस्मान्मोक्ष इति । गौड़, ज्वालाप्रसाद. गौडपादभाष्य. 51.पृष्ठ.100.